MT EDUCARE LTD.

ICSE X **SUBJECT : HINDI**

BOARD PAPER – 2014

QUESTION PAPER

Section - A (40 Marks)

*(Attempt **all** questions)*

Question 1

Write a short composition in **Hindi** of approximately **250** words on any **one** of the following topics :

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर **हिन्दी** में लगभग **250** शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए । **[15]**

i) भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन करते हुए पाश्चात्य संस्कृति की कुछ अपनाने योग्य बातों पर प्रकाश डालिए ।

ii) आज खेलो में फैला भ्रष्टाचार एक नया ही रूप ले रहा है, विषय को स्पष्ट करते हुए अपने प्रिय खेल का वर्णन कीजिए तथा जीवन में खेलों की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए ।

iii) अपने जीवन में घटी उस घटना का वर्णन कीजिए जिसे याद करके, आप आज भी हँसे बिना नहीं रहते तथा इससे आपको क्या लाभ मिलता है ।

iv) एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो :-

'' जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय।''

v) प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, कहानी अथवा घटना लिखिये जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए ।

Question 2

Write a letter in **Hindi** in approximately **120** words on any **one** of the topics given below :

निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर **हिन्दी** में लगभग **120** शब्दों में पत्र लिखिए । **[7]**

i) आप किसी स्थान विशेष की यात्रा करना चाहते हैं । उस स्थान की जानकारी प्राप्त करने के लिए, उस क्षेत्र के पर्यटन विभाग के अधिकारी को पत्र लिखकर पूछताछ कीजिए ।

ii) आपका भाई अपना अधिकांश समय मोबाइल फोन के उपयोग में बिताता है । मोबाइल फोन के अधिक उपयोग करने से होने वाली हानियों का उल्लेख करते हुए, उसे पत्र लिखिए ।

Question 3

Read the passage given below and answer in **Hindi** the questions that follow, using your own words as far as possible :

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए । उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए । **[10]**

महान रसायनशास्त्री आचार्य नागार्जुन को प्रयोगशाला के लिए दो सहायकों की आवश्यकता थी । अनेक युवक उनके पास आए और निवेदन किया कि वे उन्हें अपने सहायक के रूप में नियुक्त कर लें । लेकिन परीक्षा लेने पर सभी प्रत्याशी अयोग्य साबित हुए । अंत में आचार्य निराश का कारण यह था कि युवकों में रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो बहुत थे और अपने विषय से परिचित भी, लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो एक पवित्र ध्येय होता है, उसका सभी में अभाव था । प्रत्याशियों में से किसी को अपने वेतन की चिंता थी, किसी को अपने परिवार को, तो किसी को अपना भविष्य उज्जवल बताना था । पर आचार्य नागार्जुन को ऐसे सहायक की आवश्कता नहीं थी । उनके मन और विचार में कुछ और ही था । निराश होकर उन्होंने सहायक की आवश्यकता होते हुए भी स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया ।

कुछ दिन बाद ही दो युवक आचार्य के पास आये । उन्होंने निवेदन किया कि वे उन्हें अपना सहायक नियुक्त कर लें । आचार्य ने पहले तो उन्हें लौटा देना चाहा, लेकिन युवकों के अधिक आग्रह पर उन्होंने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया । आचार्य ने दोनों युवकों को एक पदार्थ देकर दो दिन के भीतर ही उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा । दोनों युवक पदार्थ लेकर अपने घर लौट गए ।

दो दिन बाद एक युवक रसायन तैयार करके सुबह - सुबह ही उनके पास पहुँचा और रसायन का पात्र उन्हें देते हुए बोला लीजिए आचार्य जी, रसायन तैयार है । रसायन के पात्र की ओर बिना देखे ही आचार्य ने प्रश्न किया, 'तो रसायन तैयार कर लिया तुमने ?'

रसायन का पात्र एक ओर रखते हुए युवक ने कहा, 'जी हाँ !' आचार्य ने दूसरा प्रश्न किया, 'रसायन तैयार करते समय किसी भी प्रकार की कोई बाधा तो उपस्थित नहीं हुई ?' युवक ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, 'बाधायें तो बहुत आई थीं, लेकिन मैंने किसी भी बाधा की चिंता किए बिना अपना कार्य चालू ही रखा तथा रसायन तैयार कर लिया । यदि मैं बाधाओं में उलझ गया होता, तो रसायन तैयार हो ही नहीं सकता था । एक ओर तो पिता के पेट में भयंकर शूल था, दूसरी ओर मेरी माता ज्वर से पीड़ित थी । ऊपर से मेरा छोटा भाई टांग तुड़वाकर पीड़ा से कराह रहा था । परंतु ये बातें मुझे रसायन बनाने से विचलित नहीं कर सकीं ।'

तभी दूसरा युवक खाली हाथ आकर वहाँ खड़ा हो गया । आचार्य जी ने उससे पूछा, 'रसायन कहाँ है ?' युवक ने झिझकते हुए उत्तर दिया, 'आचार्यजी, मैं क्षमा चाहता हूँ । मैं रसायन तैयार नहीं कर सका क्योंकि जाते समय मार्ग में एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था । वह एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था । मेरा सारा समय उसकी सेवा में ही व्यतीत हो गया ।'

आचार्य ने पहले युवक से कहा, 'तुम जा सकते हो । मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं । रसायनशास्त्री यदि पीड़ा से कराहते हुए व्यक्ति की उपेक्षा करे, तो वह शास्त्र में अपूर्ण है ।' दूसरे व्यक्ति को उन्होंने अपना सहायक नियुक्त कर लिया । भविष्य में वही युवक उनका दायाँ हाथ बना और उन्हें अति प्रिय लगने लगा ।

प्रश्न

i) आचार्य को कैसे सहायकों की आवश्यकता थी और क्यों ?
ii) आचार्य की निराशा का क्या कारण था ? निराश होकर उन्होंने क्या किया ?
iii) आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने का क्या उपाय सोचा तथा क्यों ?
iv) दूसरा युवक रसायन क्यों तैयार नहीं कर सका ? इससे उसके चरित्र का कौन - सा गुण स्पष्ट होता है ?
v) आचार्य ने अपना सहायक किसे और क्यों चुना ?

Question 4

Answer the following according to the instructions given :
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए ।

i) निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए । **[1]**
(a) रसायन (b) नुकसान

ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी **एक** शब्द के **दो-दो** पर्यायवाची शब्द लिखिए । **[1]**
(a) बाधा (b) पीड़ा

iii) निम्नलिखित शब्दों में से **किन्हीं दो** शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए । **[1]**
(a) अंत (b) पवित्र (c) निराशा (d) भविष्य

iv) भाववाचक संज्ञा बनाइए । **[1]**
(a) अतिथि (b) निपुण

v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी **एक** की सहायता से वाक्य बनाइए । **[1]**
(a) टका सा जवाब देना (b) सिक्का जमाना

v) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिये। **[3]**
(a) अंत में आचार्य निराश हो गए । (आशा शब्द का प्रयोग कीजिए।)
(b) वह मुझे अति प्रिय लगने लगा । (वाक्य को भविष्यत् काल में बदलिए।)
(c) उसका कार्य <u>प्रशंसा के योग्य</u> था । (रेखांकित के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य पुनः लिखिए)

Section B is not given due to change in present Syllabus

❖❖❖❖